बिहार में किसान आंदोलन
(1919 से 1947)

डा0 रविन्द्र कुमार
M.A. Ph.D.(History)
वेगूसराय (बिहार)

विश्व इतिहास को अध्ययन करने के बाद पता चलता है कि संसार की जितनी भी महान राष्ट्रीय आंदोलन हुए है उससे प्रायः किसानों की भूमिका सराहनीय रही है। 1789 ई0 में होने वाली फ्रांस की राज्य क्रांती 1911 ई0 की चीन की क्रान्ति तथा 1917 की रूसी क्रान्ति सुत्रपात वस्तुतः मध्यवर्ग के द्वारा ही हुआ। असंतोष की ज्वाला वस्तुतः किसान के हृदय से ही भभकी थी जिसको व्यापक रूप देने में सम्पूर्ण देशवासियों ने सहयोग दिया था। किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता खास कर वैसे देशों में जहाँ कृषकों की प्रधानता हो, किसानों के सहायोग के विना संभव नहीं है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में किसान आंदोलन की भूमिका साराहनीय है कुछ भारतीय नेताओं का ध्यान किसान की दैयनिय तथा उपेक्षित अवस्था की ओर गया और उन्होने किसानों को संगठित कर उन्हें अंग्रजों के पृष्टपोषक जमीदारों के अत्याचार तथा शोषण के चंगुल से मुक्त करने हेतु उनके हृदय में निर्भिकता तथा स्वंतत्रता का बीच वपन करने का प्रयास किया।

भारतीय किसानों में विदेशी सत्ता के विरूद्ध तीव्र विरोध की भावना उस समय से ही परिलक्षित होती है जब ईस्ट इंडिया कंपनी को 1765 ई0 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अधिकार प्राप्त हुआ और अंग्रेज किसानों के सम्पर्क में आये। कंपनी सरकार प्रयक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसानों को उपेक्षित रूप से देखने लगे। 1770 ई0 में बंगाल और बिहार में भीषण अकला पड़ा जिससे सम्पूर्ण जनसंख्या का पचास प्रतिशत किसान भूखमरी का शिकार बना और उन्हें अपना प्राण गवाना पड़ा। इस परिस्थिति में भी अंग्रेज सरकार या स्थानीय जमींदार उन्हे किसी भी प्रकार का सहयोग नही दिया। बचे हुये किसान अंग्रेजो के विरोधी बन गये। इस परिस्थिति में विदेशी शासन के आर्थिक शोषण की नीति ने किसानों में असंतोष का वातावरण उत्पन्न कर दिया और उनके दिल में उमड़ती असंतोष की ज्वाला विद्राह की चिनगारी के रूप में बिहार के विभिन्न भागों में छिटकने लगी। 1772 ई0 से 1789 ई0 के बीच बिहार में फकीर और सन्यासी का आंदोलन भारतीय भुमि पर ब्रिटिश अधिपत्य के बाद अंग्रेजों के खिलाफ किया गया प्रथम भारतीय किसान आंदोलन था। बिहार के किसान अपना अधःपतन देखकर अपने को रोक नहीं सके और फकीर एवं सन्यासी का रूप धारण कर अंग्रेजों और अंग्रेज के पिट्ठू जमीनदार के विरूद्ध आंदोलन करने पर उतर गये। [1]

विदेशी शासन के खिलाफ में प्रांम्भिक विद्रोह अधिकांशतः अनपढ़ किसानों द्वारा ही की गयी। इस आंदोलन ने स्पस्ट कर दिया कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये आंदोलन की मुख्य धुरी के रूप में किसानों का आंदोलन कितना महत्वपुर्ण है। [2]

बिहार में किसानों का विद्रोह यदा– कदा होता रहा है। 1820 ई0 में एण्ड्रू___ और कुन्टु दो मुडांओ के द्वारा किया गया आदिवासी किसानों का विद्रोह प्रमुख है। इसके बाद अनकोनेक विद्रोह होते रहे। 1895 ई0 में छोटनागपुर में विरसा आंदोलन किसानों पर किये गये अत्याचार के विरूद्ध ही था।

वीसवी शताब्दी के प्रथम दो दशकों में लगातार मूल्य वृद्धि के कारण किसानों में अधिक तंगी आ गयी थी। धनी किसान तो थोड़ा बहुत फायदा उठा लेते थे किन्तु गरीब किसानों
को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मूल्य वृद्धि के साथ–साथ जमीन के लगान भी वृद्धि कर दिया गया जिसके कारण किसानों को कठिनाईयो का सामना करना पड़ा।

लखनऊ मे अखिल भारतीय कॉग्रेस का अधिवेशन 1916 ई0 में अम्विकाचरण मजुमदार की अध्यक्षता में हुआ। चम्पारण के किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने वहाँ जाकर महात्मा गाँधी से भेंट की तथा वहाँ उत्तर बिहार में निलहे कोठी के अंग्रेजों द्वारा वहाँ के निरीह किसानों एवं खेतिहर मजदुरो के प्रति दिये जाने वाले

पशुवत व्यवहार और अत्याचार की कथा सुनायी। उनके साथ दरभंगा के देशभक्त वकील बाबू ब्रजकिशोर भी प्रतिनिधी के रूप में सम्मितिल हुये। महात्मा गाँधी ने दण्ड विधान धारा 144 के लागू रहते भी चम्पारण पहँच गये और वहाँ के किसानों का वयान सुने और बिहार के उपराज्यपाल सर एडवर्ड गेट से भेट कर किसानों के समस्या का समाधान किया। गाँधी जी यह पहली नैतिक विजय थी। ''चम्पारण ऐग्रेरियन बिल'' पारित हुआ। उनके द्वारा चम्पारण के पीड़ित किसानों के चिर कष्टों का अवसान हुआ। बिहार के किसानों की प्रथम विजय थी। बिहार के निलहे मालिक के उत्पीड़न अत्याचार में कमी आयी।[4] गाँधी जी के चम्पारण सत्याग्रह से प्रेरणा पाकर एक किसान नेता विद्यानंद किसानों की स्थिति को सुधारने के लिये जमीनदारों के विरूद्ध आन्दोलन करने का बीड़ा उठाया। स्वभावतः सभी छोटे किसानों ने स्वामीजी का साथ दिया। [5]

चम्पारण सत्याग्रह के बाद बिहार में किसानों का सबसे बड़ा और संगठित संघर्ष दरभंगा के जमीनदार के विरूद्ध स्वामी विद्यानंद के नेतृत्व में प्रांरभ हुआ। दरभंगा राज का अधिकार सम्पूर्ण हुआ। दरभंगा राज का अधिकार सम्पूर्ण बिहार में गलभग 12 प्रतिशत क्षेत्र पर था। दरभंगा, मुजफफरपुर, सहरसा, पुर्णिया तथा भालगपुर जिला के बड़े हिस्सों पर फैली हुयी थी। दरभंगा महाराज की जमींदारी भारत के बड़े जमीनदारों में से एक था। [6]

2 अक्टूबर 1919 को मधुबनी के करीब पाँच हजार किसान इस क्रम में जमा हुये और किसानों की दशा सुधारने के लिये अपनी ओर से बिहार के राज्यपाल को एक टेलीग्राम की समीक्षा के लिये जाँच आयोग बैठाने की सिफारिश की गयी। [7]

5 फरवरी 1920 ई0 को सुपौल क्षेत्र में लगभल पन्द्रह हजार किसानों की एक साथ में यह मांग की गयी। [8]

1. स्थायी प्रवन्ध के द्वारा लगाये गये लगान में वृद्धि पर रोक लगे।
2. सार्वजनिक चारगाह की व्यवस्था की जाय।
3. अपनी जमीन पर लगी वृक्ष को बेचने का और कुँआ खोदने का अधिकार प्राप्त हो।

कहने का तात्पर्य यह है कि बिहार के अनेकों भुभाग में किसान आंदोलन तीव्र गति से बढ़ रही थी जो केवल ब्रिटिश सरकार के ही विरूद्ध नही था वरण स्थानीय जमीनदारों का विरोध प्रारंभ हो गया था। भारतीय कॉंग्रेस के लिए यह एक रूकावट पैदा हो गया क्योंकि उसे जमीनदार और किसान दोनो को लेकर चलना था। कॉंग्रेस के नेता और कार्यतागण इसका विरोध करने लगे ओर किसान आंदोलन को रोकने का प्रयास किया गया। कॉंग्रेसी नेताओं ने यहाँ तक स्वामी विद्यानंद की सभा में सम्मिलित न होने का प्रचार जनता के बीच करने लगे उनलोगों ने यह प्रचार किया कि स्वामी विद्यानंद लोगो को गलत राह पर ले जा रहे है। कॉंग्रेस के नेतागण का कहना था कि अभी ब्रिटिश सरकार से लोहा लेने का कार्यक्रम चल रहा है जिसमें किसान और जमीदार दोनो को एक साथ रहना अपेक्षित है न कि किसान स्थानीय जमीदार के साथ लड़ाई छेड़े। इसमें संदेह नही कि बिहार के जमीदार प्रत्यक्ष रूप से तो नही कि अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश

सरकार का विरोध कर रहे थे। उदाहरण के लिये कॉगेस की स्थापना काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक दरभंगा महाराज कॉग्रेस का आर्थिक सहयोग देते रहे। अतः राष्ट्रीय स्वतं.ता की लड़ाई में जमीदारो को अलग नही किया जा सकता था। [9]

1919–20 ई0 के आदोलन की असफलता के वाद बिहार के तेजस्वी नेता सहजानन्द सरस्वती का ध्यान किसानो की समस्या की ओर गया। स्थानीय किसानो की समस्या को हल करने तथा उसकी कठिनाइयों को सरकार तक पहूँचाने एवं उसके निदान हेतु 4 मई 1928 ई0 को पश्यिमी पटना किसान सभा की स्थापना किया। यह सभा बिहार स्थिति अश्रम में हुआ। इस सभा में सहजानन्द सरस्वती तथा उनके प्रमुख सहयोगी जयप्रकाश नारायण कार्यानन्द शर्मा युगल किशोर सिंह जमुना कार्यी नन्द अवधेश्वर प्रसाद सिंह रमानन्द मिश्र आदि भाग लिये थे। इस सभा में अच्युतपटवर्धन युसुफ मेहरअली, अशोक मेहता, तथा मीनू भसानी भी भाग लिये थे। [10]

इस सभा में निणर्य लिया गया कि बिहार के किसानों को संगठित किया जाय। पुनः 1929 ई0 में सोनपुर मेला में बिहार किसान सम्मेलन सम्मन्न हुआ। 1930 ई0 में सविनय अवज्ञ आंदोलन में भाग लेने के लिये किसान आंदालेन को स्थगित करना पड़ा। सवों ने गाँधी जी का साथ देना शुरू किया। पुनः 1933– 34 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन की असफलता के वाद किसान आंदोलन मे सक्रीयता आयी। [11]
किसान आंदोलन जिसका संगठित रूप किसान सभा या जो निश्चय ही सबसे महत्वपूर्ण जनसंगठन या और बिहार उसके लिये सर्वाधिक शक्तिशाली भूमि थी। 1929– 30 के करीब आते –आते विश्वव्यापी आर्थिक मंदी हुई। बढ़ती हुयी जनसख्या वेरोजगारी उत्पादन में कमी खाद्यपदार्थो के मूल्य में गिरावट तथा सरकार के द्वारा बढाये गये लगान वृद्वि से किसानों की हालत सोचनीय हो गयी थी और वे सरकार के लगान जमा करने के लायक भी नही थें किसानो का विद्रोह रूका नही था केवल सुप्त अवस्था मे आ गया था जिसका विहटा की किसान सभा ने जाग्रति अवस्था में लाने का प्रयास किया था। **12**
यद्यपि एक अमेरिकी विद्वान वालटर हाउजर ने इसे भूमिहारो का आंदोलन बताया था किन्तु यह उनकी भूल थीं। अमेरिकी विद्वान को यहाँ की सम्पुर्ण जातियों का अध्ययन नही था। उस सभा में सभी जाती के लोग भाग लिये थे भले ही भूमिहारो की संख्या अधिक हो। 1934 ई0 में बिहार में भयंकर भूकम्प हुआ और किसान सभा की कार्यवाही कुछ दिनों के लिये स्थगित कर दिया गया। [13]
1935 ई0 तक आते –आते बिहार प्रदेश किसान सभा हर स्तर काफी सक्रिय हो गयी । लगभग सभी जिलो में किसान सभा का संगठन हो गया था। 1935 ई0 वह किसान सभा के सदस्यो की संख्या लगभग 80 हजार हो गयी । 1935 ई0 बिहार प्रांतकोसिल की बैठक पटना में हुयी। कोसिल ने निम्नलिखित मॉगे पेंश की। [14]

1. किसानों के ऋण की जाँच के लिये एक कमिटी की स्थापना की जाय।
2. कृषि ऋृण पर अधिकतम व्याज दर 6/0 छः प्रतिशत हो।
3. ऐसे ऋणी जिनके यहाँ ऋण की अदायगी में सुगम किस्त कर दिया जाय।

26–27 नवम्बर 1935 ई0 में विहार प्रात्तीय सम्मेलन की तीसरी बैठक हाजीपुर में हुयी। इस सम्मेलन में भाग्य लेने वालो में प्रमुख व्यकियों जयप्रकाश नारायण यदुनन्दन शर्मा देवव्रत शास्त्री रासविहारी लाल, मटुकधारी सिंह यमुना कार्यी ब्रंजविहारी झा तथा श्रीमति चन्द्रावति देवी थी। बैठक में सर्वप्रथम सदस्यों की संख्या बढाने पर बल दिया गया। साथ ही साथ यह निर्णय लिया गया कि बिहार के हर जिले में सुसंगठित शाखा की स्थापना की जाय । इस सम्मेलन के यह भी निर्णय लिया गया कि स्वतंत्रता प्रप्ति के लिये अगर क्रांन्तिकारी पथ अपनामा पर तो कोई अत्युकृ नही। उनलोगों ने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिये गाँधी वादी विचारधारा के विरूद्व नीति अपनाने को तैयार हो गये।[15]

विहार के ऐसे कई युवक थे जो गाँधी जी के विचारधारा के विरूद्व संघर्ष करने को तैयार
थे। उदाहरण के लिये दरभंगा मे शिवकान्त मिश्र घुम –घुम कर क्रान्तिकारी विचार फैला रहे थें। ब्रहम्देव नारायण ठाकुर ग्राम मिड़ी दरभंगा के थे जो बम बनाते पकड़ा गये और 14 वर्ष जेल का सजा भूगताना पड़ा । [16]
1937 ई0 में विहार विधानसभा का चुनाव हुआ जिसमें किसना सभा के सदस्यो को कोई सीट नही मिला क्योकि ये लोग क्रान्ति कारी थे।[17] फिर भी 1937 ई0 में कॉग्रेस द्वारा विहार में सरकार बनाया गया और किसानो की समस्या पर ध्यान देते हुये कुछ प्रस्ताव किसानो के हित में पास किया गया। परन्तु सरकार की मान्यता उसे प्राप्त नही हो सकी। अतः जयप्रकाशनारायण रघुनन्दन शर्मा तथा रमानन्द मिश्र ने उसकी आलोचना किये। प्रांत के विभिन्न भागो में किसान आंन्दोलन फिर जोर पकड़ा और प्रत्येक जमीदारो के विरूद्व आन्दोलन सुरू किया गया। [18]
दिस्म्बर 1938 ई0 विहार प्रान्तीय सम्मेलन समस्तीपुर के समीप ताजपुर थाना के अन्तरर्गत आयनी नाम स्थान पर हुआ। विहार में इस संगठन की बैठक में वह सबसे महत्वपूर्ण था। इसमें भारी संख्याा में लोग उपस्थित हुये। बिहारा के किसान नेताओं के अतिरिक्त उतरप्रदेश से आये नरेन्द्र देव और महोन लाल गोतम भी भाग लेने आये। [19] श्री राहुल सांकृत्यान ने हर जिल में सत्याग्रह करने की अनुशंशा किये।

मोहन लाल गौतम ने तात्यकालिन अर्न्तराष्ट्रीय स्थिति तथा घटनाओं पर प्रकाश डाले तथा विश्वयुद्व छिड़ने पर आजादी प्रप्त करने के लिये क्या करना पड़ेगा, इस विषय पर संकेत दिये। [19]

सम्मेलन की सूची पर 29 एजेण्डा थे जिसमे सातवॉ सबसे अधिक महत्वपूर्ण था इसमें कहा गया कि किसानो व कास्त जमीन जमीदारों से द्वारा छीनना अनुचित था और उसके विरूद्व किसान लड़ने को तैयार रहे। [22] दिसम्बर 1938 को यदुनन्दन शर्मा ने खेड़ा में विवादग्रस्त भूमि को फसल काटकर प्रांरभ किया। यह सत्याग्रह गया पटना, सारण, दरभंगा आदि जिलो में प्रांरभ किया गया। सरकार सत्याग्रही को जेल भेजते रहे किन्तु आंदोलन चलता रहा 1940 ई0 में किसान आंदोलन के कार्यकर्ताओं को जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से मुक्त होने के वाद धनराज शर्मा, यमुना कार्यी रामानन्द मिश्रा आदि पुनः किसान आंदोलन के लिये सक्रिय हो गये। [20]

1942 ई0 में गॉधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ों आदोलन प्रारंभ हुआ इस आंदोलन में किसानों से कहा गया कि के साहस से काम ले। जमीनकी मालगुजारी देना बन्द करे। कास्तकारो के लिये गॉधी जी ने कहा कि जमीन उनकी है न कि सरकार की। जहॉ जमीदार है वहाँ जमीदार और किसान आपसी रजामंदी के साथ सरकार का विरोध करे। 21

लेकिन नेताओं के आकास्मिक गिरफ्तारी के कारण उर्पयुक्त निर्देश लागु नही हो सका। 8 अगस्त 1942 के रात्रि में भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित होने से अगले दिन गॉधी जी और अन्य नेताओ को गिरफ्तारी कर लिया गया। [22]

गॉधी जी की गिरफ्तारी सुनकर विहार के प्रत्येक भाग में आंदोलन सुरू हो गया। इस आंदोलन में किसानों की भागीदारी पूर्ण रूप से रहा । आदोलन केवल शहर तक ही सीमित नही रहा वरण गॉव –गॉव में किसान अपने जमीन माल मवेसी की परवाह न कर इस संग्राम में कुद पड़े। किसानों ने चौकीदारी टैक्स मालगुजारी आदि देना वन्द कर दिया और अंग्रेजों के खिलाप इन्कालप की नारा लगाने लगे। उन्होंने देहातो सरकारी थाना पोस्ट ऑफिस और अंग्रेजों के ठहराव स्थान में आग लगाने लगे। उन्होने गोली की परवाह नही किये। [23]

अक्टुवर–नवम्बर 1942 तक स्थिति में परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता प्रेमियों ने छिपकर भी काम करते रहे आंदोलन को गतिरोध नही होने दिये। कारवास की कठोरता तथा

प्रतिवन्ध से सच्ची राष्ट्रभावना का उन्मुलन नही कर सके सरकार।

1945 ई0 में इंग्लेण्ड में लेवर पार्टी की सरकार हुयी। 4 जुलाई 1947 को ब्रिटिश

पार्लियामेन्ट में भारत स्वाधीनता विधेयक प्रस्तुत किया गया। विना किसी विवाद के वह 18 जुलाई 1947 को स्वीकृत हुआ। इस प्रकार सैकड़ो वर्षो के वाद पराधीनता से विधिवत मुक्त होने का समय निश्चित हुआ। 15 अगस्त 1947 के प्रातः युनियन जैक के स्थान पर तिरंगा फहराया गया। भारत स्वतंत्र सवो के लिये हुआ और बिहार के किसानों ने भी अपने– अपने घरो में दीप जलाकर स्वतंत्रता का उल्लास मनाये। अंग्रेज के समय जमीदारो द्वारा किसानों पर जो अत्याचार होता था वह भी जमीदारी कानून उन्मूलन कानून के द्वारा समाप्त हो गया। इस तरह आम नागरिक को जमीदारो के शोषण से भूमि मिल गयी। फिर भी कृषि विकास के लिये जो सुविधा मिलनी चाहियें था वह अभी तक नही मिल सका। आज भी किसान सभाये होती है और किसान लड़ते हैं जो भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के किसानों का योगदान अवर्णनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिवकुमार – ''पीजेन्ट्ररी एण्ड नेशनल मूभमेन्ट'' – पृ0 –19
2. सेन भवानी– ''इवोलुशन और अग्रेरियन रिलेशन इन इंडिया'' पृ0 –60
3. शिव कुमार– 'पीजेन्ट्री एण्ड नेशनल मुभमेन्ट'' पृ0 –19
4. डा0– डी0 एन0 सिंह – ''मिथिला में स्वातंत्र आंदोलन का उदभव और विकास'' –पृ0– 76–77
5. शिव कुमार– पूर्व वर्णित –पृ0– 56
6. पीजेन्ट प्रोस्टेट एण्ड दरभंगा राज (1919–20) पृ0 – 69
7. बिहार एण्ड उड़ीसा रेवेन्यू प्रोसिडिंग – 1919
8. वही – 1920
9. वाल्टर हाउजर – ''बिहार प्रोभिंसियल किसान सभा'' (बिहार स्टेट आरकाईव पटना)
10. बिहार किसान सभा न0 –28– 1929,
11. सुमित सरकार – ''मॉर्डन इंडिया'' पृ0– 305
12. दत्ता के0के0 – ''फ्रिडम मूभमेन्ट इन बिहार'' भाग – 2, पृ0– 235
13. वाल्टर हाउजर – ''द विहार प्रोसिडिंग सभा' – पृ0– 66
14. सर्चलाइट – 8 फरवरी 1935
15. दत्ता के0 के0 – ''फ्रिडम मूभमेन्ट इन बिहार'' भाग– 2 पृ0– 246
16. वही – 457
17. जनता– 7 फरवरी 1938
18. कुमारी रेणु – सहजानन्द सरस्वती अप्रकाशित शोध, पृ0– 163
19. दत्ता के0 के0 पूर्ववर्णित –पृ0 309
20. कुमारी रेंणु पुर्व वर्णित – पृ0– 164
21. पा0 – स्पेशल फाइल न0– 276 (4) 1938
22. विपिन चन्द्रा – पूर्व वर्णित – पृ0 – 424
23. डा0 राजेन्द्र प्रसाद – ''आत्मकथा'' – पृ0– 59